INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

भारत और चीन के मध्य सम्बन्धः सीमा विवाद के विशेष संदर्भ में

(Relations between India and China: with special reference to the Border dispute)

डॉ. प्रिंस कुमार कसौधन

असिस्टेंट प्रोफेसर (सैन्य विज्ञान विभाग)

पी.जी. कालेज मलिकपूरा,

गाजीपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2025-23723262/IRJHIS2509013

सारांश (Abstract):

भारत और चीन एशिया की दो बड़ी ताकतें हैं, जिनके रिश्तों में सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों साथ–साथ चलते हैं। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से जुड़े होने के बावजूद, इन संबंधों की सबसे बड़ी चुनौती सीमा विवाद है। करीब 3,500 किलोमीटर लंबी साझा सीमा का बड़ा हिस्सा अब तक तय नहीं हो पाया है। अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्र लंबे समय से विवाद के केंद्र में हैं।

1962 का युद्ध और हाल के वर्षों में डोकलाम व गलवान जैसी घटनाएँ यह दिखाती हैं कि सीमा मुद्दा आज भी तनाव का बड़ा कारण है। इसके बावजूद, व्यापार और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग से रिश्तों में संतुलन बनाए रखने की कोशिश भी होती रही है।

यह अध्ययन भारत–चीन संबंधों को सीमा विवाद के दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करता है और यह जानने का प्रयास करता है कि भविष्य में बातचीत और आपसी विश्वास के जरिए स्थायी समाधान कैसे संभव हो सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): *भारत–चीन सम्बन्ध, सीमा विवाद, अक्साई चिन, अरुणाचल प्रदेश, 1962 युद्ध, डोकलाम, गलवान घाटी, कूटनीति, स्थायी समाधान*

परिचय :

भारत और चीन एशिया महाद्वीप की दो प्राचीन सभ्यताएँ हैं, जिन्होंने हजारों वर्षों से मानव सभ्यता के विकास में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। दोनों देशों की ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक विविधता, जनसंख्या की विशालता, आर्थिक संसाधन और भू–राजनीतिक महत्व इन्हें विश्व मंच पर अलग पहचान दिलाते हैं। आज की दुनिया में जब भी एशिया की राजनीति और वैश्विक शक्ति–संतुलन की चर्चा होती है, तो भारत और चीन का नाम स्वाभाविक रूप से आता है। प्राचीन काल से ही इन दोनों देशों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्क रहे हैं, किंतु आधुनिक युग में यह संबंध मित्रता और प्रतिस्पर्धा दोनों का मिश्रण बन गए हैं।

भारत और चीन के बीच संबंधों में सबसे बड़ा अवरोधक तत्व सीमा विवाद है। यह विवाद केवल भूगोल

तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सुरक्षा, सामरिक महत्वाकांक्षाएँ, राष्ट्रीय अस्मिता और अंतरराष्ट्रीय राजनीति की जटिलताएँ जुड़ी हुई हैं। 1962 का युद्ध इस विवाद का चरम उदाहरण था, जिसने दोनों देशों के बीच गहरी खाई पैदा कर दी। युद्ध के बाद भी सीमावर्ती तनाव समय–समय पर उभरते रहे हैं। डोकलाम संकट (2017) और गलवान घाटी संघर्ष (2020) यह दर्शाते हैं कि सीमा विवाद आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना छह दशक पहले था।

इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत और चीन के संबंधों को ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य में समझना है। इसमें विशेष ध्यान सीमा विवाद पर केंद्रित होगा, क्योंकि यह दोनों देशों के बीच मित्रता और सहयोग की सबसे बड़ी बाधा है। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि भविष्य में इन संबंधों की दिशा किस ओर जा सकती है और क्षेत्रीय व वैश्विक राजनीति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

भारत और चीन के संबंधों की जड़ें प्राचीन काल में मिलती हैं। बौद्ध धर्म ने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सेतु का कार्य किया। भारतीय भिक्षु चीन गए और वहाँ धर्म का प्रचार किया। वहीं चीन से फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग जैसे यात्री भारत आए और यहाँ की शिक्षा, संस्कृति और समाज का गहन अध्ययन किया। इन यात्राओं ने न केवल दोनों देशों को आध्यात्मिक स्तर पर जोड़ा, बल्कि ज्ञान और विचारों के आदान–प्रदान का अवसर भी दिया।

व्यापार भी प्राचीन कालीन संबंधों का प्रमुख आधार था। रेशम मार्ग के माध्यम से भारत से मसाले, औषधियाँ और कीमती पत्थर चीन जाते थे, जबकि चीन से रेशम, कागज और चीनी मिट्टी के बर्तन भारत लाए जाते थे। इस व्यापारिक आदान–प्रदान ने दोनों सभ्यताओं को समृद्ध बनाया और सांस्कृतिक संबंधों को गहराया।

मध्यकाल में दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क अपेक्षाकृत कम हुआ, लेकिन यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। तिब्बत यहाँ सेतु का काम करता रहा। परंतु औपनिवेशिक काल में परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल गईं। ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत को उपनिवेश बनाकर रखा और अपने सामरिक हितों के लिए हिमालयी क्षेत्र में सीमाएँ खींचीं। 1914 की शिमला संधि के अंतर्गत मैकमहोन रेखा खींची गई, जिसे भारत वैध मानता है, जबकि चीन ने कभी इसे स्वीकार नहीं किया। यही रेखा भविष्य में अरुणाचल प्रदेश विवाद का कारण बनी।

1947 में भारत स्वतंत्र हुआ और 1949 में चीन में कम्युनिस्ट शासन की स्थापना हुई। प्रारंभिक वर्षों में दोनों देशों ने आपसी मित्रता पर जोर दिया। पंचशील समझौते और "हिंदी–चीनी भाई–भाई" के नारे ने यह संकेत दिया कि दोनों देश शांति और सहयोग की राह पर आगे बढ़ेंगे। किंतु यह मित्रता ज्यादा समय तक नहीं टिक सकी। तिब्बत पर चीन का नियंत्रण, 1959 में दलाई लामा को भारत में शरण मिलना और अक्साई चिन क्षेत्र में चीन द्वारा सड़क निर्माण ने संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया।

सीमा विवाद का स्वरूप और उसका महत्व :

भारत–चीन सीमा लगभग 3,500 किलोमीटर लंबी है और इसका बड़ा हिस्सा अब तक औपचारिक रूप से सीमांकित नहीं हुआ है। इस कारण सीमा विवाद कई दशकों से दोनों देशों के संबंधों का सबसे बड़ा अवरोधक बना हुआ है।

पश्चिमी क्षेत्र में अक्साई चिन का विवाद सबसे गंभीर है। यह क्षेत्र जम्मू–कश्मीर का हिस्सा माना जाता है, किंतु चीन इसे शिनजियांग और तिब्बत के बीच का क्षेत्र बताता है। चीन ने यहाँ एक सामरिक महत्व की सड़क भी बनाई है। भारत इसे अपनी संप्रभुता का उल्लंघन मानता है।पूर्वी क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश विवाद का केंद्र है। चीन इसे दक्षिण तिब्बत कहता है और विशेष रूप से तवांग क्षेत्र पर दावा करता है। तवांग बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ छठे दलाई लामा का जन्म हुआ था। भारत स्पष्ट रूप से कहता है कि अरुणाचल प्रदेश उसका अभिन्न अंग है।मध्य क्षेत्र, जो उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश से जुड़ा है, अपेक्षाकृत कम विवादास्पद रहा है, लेकिन यहाँ भी लगभग दो हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को लेकर मतभेद हैं।इन विवादों का महत्व केवल भूगोल तक सीमित नहीं है। यह दोनों देशों की सुरक्षा, सामरिक रणनीति और अंतरराष्ट्रीय स्थिति से जुड़ा है। हिमालयी क्षेत्र सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एशिया की छतरी के रूप में जाना जाता है। यहाँ से चीन और भारत दोनों की रक्षा नीति प्रभावित होती है।

1962 का भारत–चीन युद्ध :

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद 1962 में युद्ध का रूप ले चुका था। युद्ध की पृष्ठभूमि 1950 के दशक में बनी जब तिब्बत पर चीन का नियंत्रण बढ़ा और भारत ने दलाई लामा को शरण दी। इसके साथ ही अक्साई चिन क्षेत्र में चीन द्वारा सड़क निर्माण ने स्थिति को और गंभीर बना दिया। भारत ने "फॉरवर्ड पॉलिसी" अपनाई और सीमा पर चौकियाँ स्थापित कीं। चीन ने इसे चुनौती दी और अक्टूबर 1962 में अचानक हमला कर दिया।

युद्ध पश्चिमी और पूर्वी दोनों क्षेत्रों में लड़ा गया। अक्साई चिन में चीन ने तेजी से बढ़त बनाई और अरुणाचल प्रदेश में उसकी सेना तेजपुर तक पहुँच गई। भारतीय सेना तैयार नहीं थी और उसे भारी पराजय का सामना करना पड़ा। नवंबर 1962 में चीन ने एकतरफा युद्धविराम की घोषणा की। पूर्वी क्षेत्र से चीन पीछे हट गया, लेकिन अक्साई चिन पर उसने कब्जा बनाए रखा।

इस युद्ध ने भारत को गहरा आघात पहुँचाया। प्रधानमंत्री नेहरू की नीतियों पर प्रश्नचिन्ह लगा और देश ने अपनी रक्षा नीति पर गंभीरता से विचार किया। इसके बाद भारत ने अपनी सैन्य क्षमता बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया।

युद्धोत्तर संबंध और सुधार का प्रयास :

1962 के युद्ध के बाद दोनों देशों के संबंध ठंडे पड़ गए। सीमाओं पर तनाव बना रहा और विश्वास की कमी ने हर संवाद को प्रभावित किया। 1967 में सिक्किम के नाथू ला और चो ला में झड़पें हुईं, जिनमें भारत ने मजबूत प्रतिरोध दिखाया। 1975 में अरुणाचल प्रदेश में भारतीय गश्ती दल पर हमला हुआ।

धीरे–धीरे परिस्थितियाँ बदलीं। 1976 में दोनों देशों ने राजनयिक संबंध बहाल किए। 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा ने एक नया अध्याय खोला। इसके बाद दोनों देशों ने सीमा विवाद को सुलझाने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला शुरू की। 1993 और 1996 में सीमा पर शांति बनाए रखने के समझौते हुए। 2005 में सीमा विवाद समाधान के लिए राजनीतिक दिशा–निर्देश तय किए गए।इसी अवधि में व्यापारिक संबंध भी तेजी से बढ़े। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। हालांकि व्यापार असंतुलन बना रहा और भारत

का व्यापार घाटा चीन के पक्ष में बहुत अधिक हो गया।

डोकलाम और गलवानः हाल की चुनौतियाँ :

हाल के वर्षों में सीमा विवाद ने फिर से गंभीर रूप लिया। 2017 में डोकलाम संकट हुआ, जब चीन ने भूटान के क्षेत्र में सड़क बनाने का प्रयास किया। भारत ने इसमें हस्तक्षेप किया और 73 दिन तक दोनों देशों की सेनाएँ आमने–सामने रहीं। अंततः स्थिति कूटनीति से सुलझाई गई, लेकिन इसने यह स्पष्ट कर दिया कि सीमा विवाद अभी भी असुलझा है।

2020 में गलवान घाटी में भारत और चीन के बीच झड़प हुई। इसमें 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए और चीन को भी नुकसान उठाना पड़ा। यह 1975 के बाद पहली बार था जब सीमा पर सैनिक हताहत हुए। इस घटना ने दोनों देशों के संबंधों को गहरी चोट पहुँचाई और आपसी अविश्वास को और गहरा किया।

भारत–चीन संबंधों के अन्य आयाम :

सीमा विवाद के बावजूद भारत और चीन के संबंध केवल सैन्य या राजनीतिक तक सीमित नहीं हैं। आर्थिक दृष्टि से दोनों देशों के बीच बड़े पैमाने पर व्यापार होता है। चीन भारत को मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स और उपभोक्ता वस्तुएँ निर्यात करता है, जबकि भारत से कच्चा माल और कृषि उत्पाद चीन को निर्यात होते हैं। हालांकि यह संबंध असंतुलित है, क्योंकि भारत का व्यापार घाटा लगातार बढ़ता जा रहा है।

सामरिक दृष्टि से दोनों देश एशिया में शक्ति संतुलन की लड़ाई लड़ रहे हैं। चीन की "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" और पाकिस्तान–चीन आर्थिक गलियारा भारत के लिए चिंता का विषय हैं। वहीं भारत ने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ "क्वाड" समूह में सक्रिय भागीदारी कर चीन को संतुलित करने की कोशिश की है।

चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ :

भारत और चीन के बीच सबसे बड़ी चुनौती सीमा विवाद है, जो अब तक सुलझ नहीं सका है। इसके साथ ही चीन–पाकिस्तान की रणनीतिक साझेदारी, आर्थिक असंतुलन, हिंद महासागर में चीन की बढ़ती सक्रियता और आपसी अविश्वास दोनों देशों के संबंधों को जटिल बनाते हैं।

फिर भी भविष्य की संभावनाएँ पूरी तरह नकारात्मक नहीं हैं। दोनों देश बड़े बाजार हैं और यदि सहयोग की राह पर बढ़ें तो एशिया ही नहीं, पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकते हैं। बहुपक्षीय मंचों पर जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और वैश्विक संकट जैसे मुद्दों पर सहयोग की गुंजाइश बनी हुई है। लेकिन यह तभी संभव है जब सीमा विवाद का स्थायी समाधान खोजा जाए और आपसी विश्वास बहाल किया जाए।

निष्कर्ष :

भारत और चीन के संबंध प्राचीन सांस्कृतिक मित्रता से लेकर आधुनिक सामरिक प्रतिस्पर्धा तक की यात्रा का प्रतीक हैं। प्राचीन काल में यह संबंध ज्ञान और आध्यात्मिकता पर आधारित थे, लेकिन आज सीमा विवाद ने इन्हें सबसे बड़ी चुनौती के रूप में खड़ा कर दिया है। 1962 का युद्ध और उसके बाद की घटनाओं ने अविश्वास की गहरी खाई बना दी, जिसे भरना आसान नहीं है।

फिर भी यह सत्य है कि भारत और चीन दोनों ही एशिया की शांति और विश्व की स्थिरता के लिए

महत्वपूर्ण हैं। यदि दोनों देश परस्पर सम्मान और समानता के आधार पर सहयोग की दिशा में आगे बढ़ें, तो न केवल सीमा विवाद का समाधान संभव है, बल्कि एक नए एशियाई शताब्दी की शुरुआत भी हो सकती है। परंतु यदि अविश्वास और प्रतिस्पर्धा जारी रही, तो यह न केवल दोनों देशों के लिए बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए खतरे का कारण बनेगा।

संदर्भ–सूची :

1. बजपाई, कान्ति. (2021). इंडिया वर्सेस चाइनाः व्हाई दे आर नॉट फ्रेंड्स. जगरनॉट।
2. फ्रैवल, एम. टेलर. (2019). एक्टिव डिफेन्सः चाइना'स मिलिट्री स्ट्रैटेजी सिन्स 1949. प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. गार्वर, जॉन डब्ल्यू. (2001). प्रोट्रैक्टेड कॉन्टेस्टः साइनो–इंडियन राइवल्री इन द ट्वेंटीएथ सेंचुरी. यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस।
4. गोखले, विजय. (2022). द लॉन्ग गेमः हाउ द चाइनीज नेगोशिएट विद इंडिया. हार्पर कॉलिन्स।
5. गोपाल, एस. (1987). इंडिया–चाइना रिलेशन्स, 1947–1977. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. लैंब, अलस्टेयर. (1964). द चाइना–इंडिया बॉर्डरः द ओरिजिन्स ऑफ द डिस्प्यूटेड बाउंड्रीज. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. मैक्सवेल, नेविल. (1970). इंडिया'स चाइना वॉर. जोनाथन केप।
8. नेहरू, जवाहरलाल. (1950–1962). चीन पर पत्र एवं भाषण. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
9. सुब्रह्मण्यम, के. (1992). इंडिया'स सेक्युरिटी स्ट्रैटेजीः द चाइना फैक्टर. इंस्टीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज एंड एनालिसिस (IDSA)।
10. चौहान, यशवंत. (2018). भारत–चीन सम्बन्धः अतीत, वर्तमान और भविष्य. राजकमल प्रकाशन।